ओ३म्

वैदिक सार्वदेशिक

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

वर्ष 8 अंक 25 20 से 26 जून, 2013 दयानन्दाब्द 190 सृष्टि सम्वत् 1960853114 सम्वत् 2070 ज्येष्ठ. शु.-12

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटौली में पिछले 6 जून से चल रहा "राष्ट्रीय कन्या चरित्र निर्माण एवं योग प्रशिक्षण शिविर" सफलता पूर्वक सम्पन्न

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ में बनने वाले मीडिया सेंटर को पूरे विश्व के दो सौ बीस देशों से जोड़ा जायेगा

– स्वामी आर्यवेश

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटौली में पिछले 6 जून से चल रहे राष्ट्रीय कन्या चरित्र निर्माण एवं योग प्रशिक्षण शिविर का समापन हुआ। समापन पर हजारों युवक तथा युवतियों ने सामाजिक बुराईयों को जड़ से खत्म करने का संकल्प लिया। शिविर का आयोजन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, युवा निर्माण अभियान तथा महिला समता मंच के संयुक्त तत्वावधान में किया गया।

शिविर में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे राज्यसभा सांसद श्री शादीलाल बतरा जी ने कहा "आर्य समाज ने हमेशा से नारी उत्पीड़न, कन्या भ्रूण हत्या जैसी बीमारियों को खत्म करने में अहम भूमिका निभाई है जिस देश में नारी का सम्मान होता है वह देश उन्नति तथा विकास करता है। बेटियाँ भविष्य की कर्णधार हैं, इसलिए हमें बेटियों को आदर देना चाहिए।" सांसद द्वारा कार्यक्रम में अपने स्वैच्छिक सांसद कोष से हाल निर्माण के लिए पच्चीस लाख रुपये की घोषणा की गई।

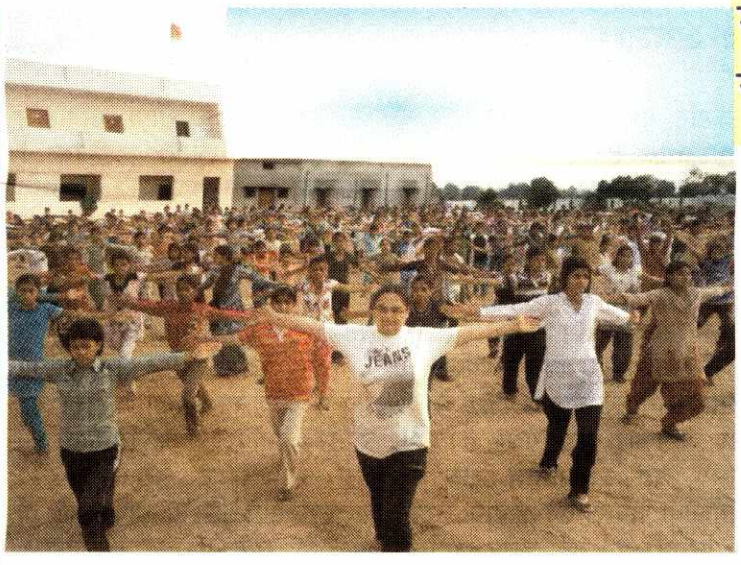

इस अवसर पर बोलते हुए सामाजिक कार्यकर्ता स्वामी अग्निवेश जी ने कहा कि "आज समाज को सही दिशा की आवश्यकता है यह दिशा आर्य समाज ही दे सकता है। समाज में फैली कुरीतियों को जड़ से मिटाकर हम देश को फिर से सोने की चिड़िया बना सकते हैं। कन्याओं को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि आर्य समाज शुरु से ही मनुष्य निर्माण तथा युवा निर्माण पर कार्य कर रहा है। जिस देश में युवा तथा मनुष्यों का निर्माण हो जाता है वह देश किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं रहता। उन्होंने कहा कि स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ में बनने वाले मीडिया सेंटर को पूरे विश्व के दो सौ बीस देशों से जोड़ा जायेगा। सेन्टर से आतंकवाद, बेरोजगारी, भुखमरी तथा दूसरी समस्याओं का वैदिक समाधान पूरी दुनिया को दिया जायेगा।

शिविर में आई युवतियों को योगासन, प्राणायाम, जूडो–कराटे, जिमनास्टिक आदि का प्रशिक्षण देकर स्व–सुरक्षा के गुर सिखाये गये। शिविर में ब्रह्मचारी दीक्षेन्द्र, बहन पूनम तथा प्रवेश आर्या ने अपने सम्बोधन में कन्याओं को बताया कि किस प्रकार से जीवन को सकारात्मक तथा रचनात्मक बनाया जा सकता है। धर्मवीर दहिया तथा जय प्रकाश ने विशिष्ट अतिथि के रूप में शिरकत की। इस अवसर पर पूर्व गन्ना मंत्री, उ. प्र. स्वामी ओमवेश, स्वामी रामवेश, शोभाराम प्रेमी, अमरेश, चांदमल आर्य, आजाद सिंह, शिव कुमार तथा उड़ीसा से आई अंजली तथा आरती को विशेष सम्मान दिया गया।

मीडिया सेन्टर से आतंकवाद, बेरोजगारी, भुखमरी तथा दूसरी समस्याओं का वैदिक समाधान पूरी दुनिया को दिया जायेगा

सर्व सुखकारी वैदिक प्रार्थना

ओ३म् इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे।
पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वादमानं वाचः सुदिनत्वमह्नाम्।।

ऋग्वेद

हे ऐश्वर्यशाली, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् वेद–ज्ञानदाता सच्चिदानन्द, 'ओम पिता'! आप हमको यज्ञीय श्रेष्ठ पदार्थ, बौद्धिक दक्षता, पुष्कल धन, आरोग्यता व मधुर वाणी दें तथा प्रत्येक दिन को हर्षोल्लास व सौभाग्ययुक्त 'सुदिन' बना दें।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

जंगल बचाने की नई मुहिम

वनाधिकार कानून बन जाने के बावजूद वनों पर आश्रित आबादी अपने हकों से महरूम हैं। राज्यसत्ता और कॉरपोरेट घराने नई किस्म की दुरभिसंधि में मशगूल हैं। ऐसे में ये वंचित और उनके बीच काम करने वाले संगठन देश भर में आंदोलन छेड़ने की तैयारी में लगे हुए हैं। वन संपदा को बचाने की इस व्यापक सामाजिक पहल के बारे में बता रही हैं रोमा।

देश में वनों के अंदर वनाधारित वन्यजन श्रमजीवियों की तादाद करीब पंद्रह करोड़ हैं, लेकिन आज भी देश की इतनी बड़ी जनसंख्या अपने मूलभूत संवैधानिक अधिकारों से वंचित हैं। यह वनसमुदाय भले ही देश की कुल जनसंख्या का एक छोटा–सा हिस्सा हो, लेकिन यह देश की रीढ़ की हड्डी हैं। अगर यह समाप्त हो गया तो देश में प्राकृतिक संपदा भी नष्ट हो जायेगी। आज ये करोड़ों लोग वनों के अंदर भूमंडलीकरण और साम्राज्यवादी ताकतों के हमले को झेलते हुए अपने अस्तित्व और इस देश की दूसरी आजादी के लिए संघर्ष की तैयारी कर रहे हैं। भले ही देश की आजादी में उन्हें गुलामी और शोषण की जिंदगी मिली हो, लेकिन इस समुदाय ने अपने जीवन का संघर्ष नहीं छोड़ा और 2006 में पारित 'वनाधिकार कानून' के तौर पर आंशिक सफलता जरूर हासिल की। यह वन्यजन श्रमजीवी समाज, वनों में स्वरोजगारी आजीविका जैसे वनोपज को संग्रह करना और बेचना, वनभूमि पर कृषि करना, वृक्षारोपण, पशुपालन, लघु खनिज निकालना व नोत्पादनों से सामान बनाना, मछली पकड़ना, निर्माण कार्य और वनोपज को इकट्ठा करना जैसे कार्य से जुड़े हैं। वनाश्रित समुदाय का एक बहुत छोटा–सा हिस्सा है जो कि वनविभाग के कार्यों में मजदूरों के रूप में पौधारोपण, आग बुझाना और निर्माण कार्य में लगा हुआ है।

वनाश्रित श्रमजीवी समुदायों को मूल रूप से दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है एक जो सदियों से जंगल में पारंपरिक तरीके से अपनी मेहनत से आजीविका चला रहे हैं जिन्हें हम 'वनजन' कहते हैं। ये मुख्यतः आदिवासी और मूलनिवासी समुदाय हैं। और दूसरा जो कि अंग्रेजी शासन काल में वनविभाग द्वारा जंगल क्षेत्र में वृक्षारोपण या फिर अन्य कामों के लिए बसाए गए थे जिन्हें 'वनटांगी या वनश्रमजीवी' कहते हैं। वनाश्रित समुदाय में 56 फीसद जनसंख्या आदिवासी और अनुसूचित जनजाति की है, जबकि अन्य गैरआदिवासी हैं जिसमें दलित, अति पिछड़ी जातियाँ और मुसलिम समदुाय के लोग शामिल हैं।

वनों में रहने वाली इतनी बड़ी जनसंख्या ने आजादी की झलक को तब महसूस किया जब 2006 में भारत की संसद ने 'अनुसूचित जनजाति और अन्य परम्परागत वनसमुदाय वनाधिकारों को मान्यता' कानून जिसे 'वनाधिकार कानून' भी कहा जाता है, को पारित किया। इस कानून के माध्यम से औपनिवेशिक परम्परा जो कि, वनविभाग के तौर पर वनों में मौजूद है, से वनाश्रित समुदाय को कानूनी रूप से मुक्ति मिली। औपनिवेशिक काल से बनी ये संस्थाएं प्राकृतिक संसाधनों की लूट के लिए बनाई गई थीं, जिन्होंने आजादी के बाद भी जंगलों को बचाने के बजाय उनका दोहन किया। हालांकि, अभी भी इस आजादी को सही मायने में पाने के लिए वनाश्रित समुदाय को एक और चुनौतीभरा संघर्ष करना है। यह टकराव अब सीधे–सीधे कारपोरेट घरानों, बड़ी विदेशी कम्पनियों से है जो इन प्राकृतिक संसाधनों पर अपना एकाधिकार जमाने की फिराक में है।

मौजूदा दौर में सारा विवाद बेशकीमती प्राकृतिक संपदा पर नियंत्रण करने का है। सभी की ललचाई नजरें इस अनमोल संपदा पर गड़ी हुई हैं। फिर चाहे वे सरकारें हों, वनविभाग हो, देसी विदेशी कंपनियाँ हों या फिर माफिया, ठेकेदार और उनहें मदद करने वाला पूरा प्रशासनिक अमला।

मौजूदा दौर में सारा विवाद बेशकीमती प्राकृतिक संपदा पर नियंत्रण करने का है। सभी की ललचाई नजरें इस अनमोल संपदा पर गड़ी हुई हैं। फिर चाहे वे सरकारें हों, वनविभाग हो, देसी विदेशी कंपनियाँ हों या फिर माफिया, ठेकेदार और उन्हें मदद करने वाला पूरा प्रशासनिक अमला। वहीं दूसरी तरफ, इन वनों पर निर्भर समुदाय है जिनके लिए यह संपति नहीं बल्कि सांस्कृतिक विरासत है और उनकी आजीविका का मुख्य स्रोत है। इस संपदा को वे आने वाली पीढ़ियों के लिए संजोकर रखना चाहते हैं। यही समुदाय डेढ़ सौ साल से आदिवासी और शोषित वर्गों की अगुवाई में अकेले लालच में लिप्त भ्रष्ट तंत्र से लड़ाई लड़ रहा है।

इस समय वनाधिकार आंदोलन में खास तौर से दो प्रकार के टकराव हैं – एक, राज्य सत्ता और वनाश्रित समुदाय के बीच। दूसरा, कारपोरेट घरानों और भारतीय जनता के बीच। यह टकराव भूमंडलीकरण के दौर के बाद उभरा है। इससे निपटने के लिए नए प्रकार के संगठनों के निर्माण की भी जरूरत है। इस टकरावों का हल श्रम आंदोलन और सामाजिक आंदोलन के तालमेल से ही हो सकता है। मौजूदा दौर में भारत के श्रम आंदोलन, जिसकी कमान संगठित क्षेत्र के हाथों में थी, अब कमजोर पड़ गया है। इस समय वह असंगठित क्षेत्र के श्रमजीवी समाज की आवाज उठाने में असमर्थ है। वहीं देखा जाए तो अब पूंजी का हमला सीधे–सीधे असंगठित क्षेत्र में हो रहा है, जिसका केन्द्र बिन्दु प्राकृतिक संसाधन है, जो कि वन, खनिज, भूगर्भीय खनिज संपदा वगैरह पर अपना एकाधिकार स्थापित करना चाहते हैं। वनाधिकार आंदोलन को व्यापक श्रमजीवी समाज के आंदोलनों से अलग करके नहीं देखा जा सकता, इसलिए नए तरह के श्रम आंदोलन को भी खड़ा करना और वन क्षेत्र के अंदर श्रम आधारित आंदोलन को व्यापक श्रमिक आंदोलनों के साथ जोड़ना आज की जरूरत है। इसलिए वनाधिकार आंदोलन में यूनियन बनाने के सवाल, न केवल वनक्षेत्र में वनजन श्रमजीवी समाज को मजबूत करेगा, बल्कि यह दूसरे क्षेत्र के श्रमजीवी समाज के साथ भी गहरा तालमेल कर पूंजीवाद के खिलाफ वृहद संघर्ष और साम्राज्यवादी शक्तियों को ध्वस्त करने के लिए अपने आपको तैयार करेगा।

वनाधिकार कानून देश का ऐसा कानून है जिसने पहली बार समुदायों के सामुदायिक अधिकारों को भी मान्यता दी है। इस कानून के तहत वनसम्पदा के नियंत्रण, व्यवस्थापन और देखरेख का जिम्मा भी समुदाय को सौंपा गया है। अनुसूचित जनजाति मंत्रालय ने इस कानून में कुछ नए संशोधन करते हुए कहा है कि देश में केवल वनोपज से ही करीब पचास हजार करोड़ का राजस्व सरकार को मिल रहा है। अगर इसमें सभी तरह के वनोपज, पत्थर, पहाड़, खनिज को जोड़ा जाए तो लाखो करोड़ों का राजस्व वनोपज से अर्जित होता है। इस सम्पदा से इतना राजस्व उत्पन्न होने के बावजूद वनों के अन्दर सबसे ज्यादा गरीबी, भुखमरी, अन्याय और शोषण है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक देश के छह सौ जिलों में से दौ सौ जिले माओवाद से ग्रसित हैं, जो कि सभी वनाच्छित जिले ही हैं। आखिर ऐसा क्यों है कि देश की बेशकीमती संपदा के अंदर रहने वाले सबसे ज्यादा गरीब हैं और वहीं पर जनवादी परिसर भी गायब है। यह कोई आकस्मिक घटना नहीं है बल्कि यह सरकार, कम्पनियों, पूंजीवादी और सामंती ताकतों की एक सोची समझी

शेष पृष्ठ 7 पर

क्यों फलदायी नहीं होते हमारे कर्म

– डॉ. एन. के. शर्मा

बहुत सारे लोग यह सोचकर भ्रमित रहते हैं कि जो सत्कार्य वे करते हैं, उनका उन्हें कोई लाभ नहीं मिलता, पुण्य नहीं मिलता। दरअसल, निजी स्वार्थ के लिए किया गया कोई भी कार्य फलदायी नहीं होता। उदाहरण के लिए, कुछ लोग यह सोचकर दान देते हैं कि पैसे फालतू पड़े हैं, काला धन है, इनकम टैक्स के झंझटों में कौन फंसे, इससे तो अच्छा भगवान को चढ़ा दें। पुण्य ही मिलेगा, भगवान खुश हो जाएंगे। अब इस दान में आपका भाव एक बोझ से छुटकारा पाना है, झंझट से बचना है, इसमें लालच और चापलूसी का भी भाव है। ऐसे में आपके मूल आंतरिक भाव के अनुसार, आपको नकारात्मक फल ही मिलेगा, पुण्य नहीं। पुण्य मिलता है, प्रेम और करुणा में, सहयोग, मैत्री, सर्व–कल्याण जैसे सच्चे सात्विक भावों से। पर ऐसे दान बहुत कम देखने में आते हैं। दान में इस बात का जरा भी महत्व नहीं है कि दान कितना महंगा है बल्कि दान में यह महत्वपूर्ण है कि दान कितना सद्भाव, करुणा, प्रेम और परोपकार से दिया गया है। ऐसे सद्भाव से दिया गया 10 रुपया भी उतना ही पुण्य देगा जितना 10 करोड़ का दान क्योंकि दोनों अवस्थाओं में आंतरिक भाव सात्विक थे और उतने ही गहरे थे। फल 10 रुपये या 10 करोड़ रुपये के अनुसार नहीं मिलेगा बल्कि फल भीतर के मूल आंतरिक भावों के अनुसार मिलेगा। हमारा अचेतन मन ऐसे ही काम करता है। वह हमेशा मूलभूत सच्चाई का साथ देता है। ये तो हमारा अहंकारी दिमाग हिसाब करता है कि 10 करोड़ दिए हैं तो ऊपर भगवान, आगे की सीट (वी.आई.पी.) तो दे ही देगा, थोड़ा खास ख्याल तो करेगा ही। अचेतन मन में चापलूसी का भाव प्रबल है, बहती गंगा में हाथ धोने वाला भाव है। ऐसे भावों से कौन पुण्य देगा?हां! आप यदि अपने बलबूते पर, कृतज्ञता का भाव प्रकट करने तीर्थयात्रा पर जाते हैं तो आपके सद्भाव के कारण पुण्य मिलने की ज्यादा संभावना रहती है। उपरोक्त तीर्थ यात्राओं में अधिकतर आपके आंतरिक भाव स्वार्थ, आपकी मनोकामनाएं, कष्ट निवारण हेतु ईश्वर का नाम जो चाहे हो, धर्म कोई भी हो, आपका मतलब सिद्ध होना चाहिए, (लालच) स्वार्थ, मोक्ष और अधिक सुख–शांति हेतु, (चापलूसी) कि ईश्वर बड़ा अहंकारी है, प्रशंसा, गुणगान से बड़ा खुश होता है, आपका वह विशेष ख्याल रखेगा। ऊपर जाने पर आपके पुराने पाप कर्म भुला देगा। नाम ले लो ईश्वर का, पूज लो उसको, बांध लो खूब प्रशंसा के पुल। कहीं नाम न लेने से, उसकी तरफ न देखने से, ईश्वर मेरा काम न बिगाड़ दें, धंधा चौपट न कर दें, ढेर सारी समस्याएं या बाधाएं न पैदा कर दें, बड़ा अहंकारी नेता किस्म का है ईश्वर। भीतर से तो चाहते नहीं हो कि ऐसे जिया जाए। परंतु मजबूरी है क्योंकि त्याग किए बिना ईश्वर हमारी सुनने वाला नहीं है। देवता प्रसन्न नहीं होंगे क्योंकि वह हमें कष्ट में देखे बिना खुश नहीं होंगे। इस तरह के नकारात्मक भावों से कभी पुण्य का लाभ नहीं मिलता क्योंकि अचेतन मन आपके आंतरिक भावों के अनुसार ही फल देता है। तीर्थ का अर्थ है दूसरे छोर (तीर) पर जाने की कला, उसकी यात्रा जो 99 फीसद किसी का भी वास्तविक उद्देश्य नहीं है। तीर्थ क्षेत्र यानी ऐसी पवित्र, ऊर्जावान जगह जहां किसी ने बैठकर साधनाएं की, एक सकारात्मक ऊर्जा का निर्माण किया, जहां रज–रज में सकारात्मक ऊर्जाओं का भंडार है, जहां एक दिव्य पुरुष या आत्मा का निवास रहा है,

तीर्थ क्षेत्र में जाते ही आप, अपने भीतर एक ऊर्जा, शांति, आनंद, एक मानसिक या भावनात्मक परिवर्तन महसूस कर सकते हैं। तीर्थ यात्रा अर्थात सामान्य तनावपूर्ण, स्वार्थ एवं वासनाओं से भरे जीवन वाले एक किनारे के विपरीत दूसरी ओर, एक ऐसा किनारा भी है जहां प्रेम, आनंद, शान्ति, करुणा, मैत्री, परोपकार जीवन की सर्वोच्च अवस्था में खिलने जैसा स्वर्ग भी है। तीर्थ यात्रा एक झटका है, उत्तेजना है, जाग जाने का संदेश है, एक एवरेस्ट की सूचना है परंतु 99 फीसद लोग तीर्थ यात्रा से लौटकर थोड़ी देर के लिए श्मशान घाट का वैराग लाकर, फिर उसी बेहोशी वाले जीवन में लौट आते हैं जैसे कोई गर्मी के अंदर ठंडे पानी के छींटे मार आया, परंतु कुछ देर बाद फिर पसीने में लथपथ हो रहा है।

ईश्वर के दरबार में आंतरिक भाव काम करते हैं बाहर से, ऊपर–ऊपर से किये गये काम या व्यवहार नहीं। अगर आप दान अहंकार–वश देते हैं कि चार लोगों में, समाज में, मेरी प्रतिष्ठा बढ़ेगी, लोग मुझे महादानी, महात्यागी, महाधार्मिक समझेंगे, वाह–वाह होगी, सम्मान मिलेगा, विशेष पद मिलेगा, तो आपका मूलभाव अहंकार एवं लालच है। तब, आपको दुनिया की कोई शक्ति, कोई नियम, पुण्य नहीं दे सकता। आपके भाव के अनुसार आपको क्षणिक आनंद या तृप्ति तो मिल सकती है, लेकिन भविष्य में इसका परिणाम दुःखद ही होगा क्योंकि बीज गलत है।

उस सकारात्मक ऊर्जा को उस तीर्थ स्थान पर जाकर कोई भी थोड़ी संवेदनशीलता से सहज ही महसूस कर सकता है। ऐसे तीर्थ क्षेत्र में जाते ही आप, अपने भीतर एक ऊर्जा, शांति, आनंद, एक मानसिक या भावनात्मक परिवर्तन महसूस कर सकते हैं। तीर्थ यात्रा अर्थात सामान्य तनावपूर्ण, स्वार्थ एवं वासनाओं से भरे जीवन वाले एक किनारे के विपरीत दूसरी ओर, एक ऐसा किनारा भी है जहां प्रेम, आनंद, शान्ति, करुणा, मैत्री, परोपकार जीवन की सर्वोच्च अवस्था में खिलने जैसा स्वर्ग भी है। तीर्थ यात्रा एक झटका है, उत्तेजना है, जाग जाने का संदेश है, एक एवरेस्ट की सूचना है परंतु 99 फीसद लोग तीर्थ यात्रा से लौटकर थोड़ी देर के लिए श्मशान घाट का वैराग लाकर, फिर उसी बेहोशी वाले जीवन में लौट आते हैं जैसे कोई गर्मी के अंदर ठंडे पानी के छींटे मार आया, परंतु कुछ देर बाद फिर पसीने में लथपथ हो रहा है। तीर्थ यात्रा का अर्थ है, ऐसी गंगा में जाना जहां सदियों से संस्कार के रूप में पाले हुए अपने अहंकार, वासनाएं, अनावश्यक महत्वाकांक्षाएं, स्वार्थ, विकार सब छोड़कर, सा फ क र , उससे मुक्त होकर , जागकर , रूपान्तरित होकर, फिर इस संसार में आना और कीचड़ हो ते हुए भी कमल के फूल की तरह खिलना औ र अपनी सुंदरता और पवित्रता का लाभ संसार को देना। तीर्थ यात्रा कर जागे ही नहीं, रूपान्तरित ही नहीं हुए तो करते रहें, ऐसी हजारों तीर्थ यात्राएं और देते रहें दिल को झूठी तसल्ली, जीते रहें भ्रम में। सं सार में किसी को कोई फर्क नहीं पड़ने वाला। अब तो होश में आ ही जाओ और कर लो सच्ची तीर्थ यात्रा, कहीं दूर जाकर नहीं अपने भीतर जाकर। बाहर की सभी तीर्थ यात्राएं, भीतर की तीर्थयात्रा से बचने के उपाय हैं। अपने से और दूर जाने के तरीके हैं। इसलिए सदियों से मानव इतनी तीर्थयात्राएं करने के बावजूद वहीं का वहीं है। उसे सिर्फ यही मानसिक संतोष है कि उसने भले ही कितने ही पापकर्म किये हों, भगवान के दरबार में हाजिरी लगा कर या थोड़ा–बहुत दान देकर या मंदिर –गुरुद्वारे में सेवा कर उसने ईश्वर को सूचित कर दिया है। अब ईश्वर इतना तो करेगा ही कि नरक से बचा लेगा। आदमी भीतर की तीर्थयात्रा से बचकर बाहर की तीर्थ यात्राओं को इतना महत्व देता है। ऐसा नहीं है कि बाहर की तीर्थ यात्राएं गैरजरूरी है या महत्वपूर्ण नहीं है। बाहर की तीर्थयात्राएं आध्यात्मिक जगत में प्रवेश करने की पहली सीढ़ी है, एक प्रेरणा है, एक उत्तेजना है। अंतिम मंजिल या उद्देश्य तो भीतर की गंगा में डूबना है, उस पार जाना है, स्वयं को तीर्थ–स्थल बनाना है, तीर्थ यात्रा करना नहीं है। स्वयं तीर्थ स्थल में रूपांतरित हो जाना है।

हमारे ही डर, हमारे ही विश्वास।
करते हैं निराश या बंधाते हैं आस।।

ईश्वर के दरबार में आंतरिक भाव काम करते हैं बाहर से, ऊपर–ऊपर से किये गये काम या व्यवहार नहीं। अगर आप दान अहंकार–वश देते हैं कि चार लोगों में, समाज में, मेरी प्रतिष्ठा बढ़ेगी, लोग मुझे महादानी, महात्यागी, महाधार्मिक समझेंगे, वाह–वाह होगी, सम्मान मिलेगा, विशेष पद मिलेगा, तो आपका मूलभाव अहंकार एवं लालच है। तब, आपको दुनिया की कोई शक्ति, कोई नियम, पुण्य नहीं दे सकता। आपके भाव के अनुसार आपको क्षणिक आनंद या तृप्ति तो मिल सकती है, लेकिन भविष्य में इसका परिणाम दुःखद ही होगा क्योंकि बीज गलत है। अब यदि, आप दान इस भाव से दे रहे हैं कि जा ले जा! तू तो निकृष्ट है, मैं उत्कृष्ट हूं तो इस दान में भी अहंकार का ही पुट है और नकारात्मक फल ही मिलेगा। इसलिए भारत में इस भाव से बचने के लिए ''दक्षिणा'' शब्द का उपयोग किया गया कि आप कृतज्ञ हो रहे हैं कि सामने वाला आपका दान सहर्ष स्वीकार कर रहा है। अगर आप दान देकर हिसाब–किताब रखते हैं या कोई अपेक्षा रखते हैं तो याद रखें आपका भाव दानमयी नहीं बल्कि एक भिखारीपन है, एक मांग है, एक लालच है, एक आकांक्षा है। तब फल भी आपको, इन भीतरी भावों के अनुसार ही मिलेगा। इसका अंतिम परिणाम दुःख के रूप में मिलता है, जो आपकी अपेक्षा की कसौटी पर खरा नहीं उतरता।

(लेखक दिल्ली स्थित रेकी हीलिंग फाउंडेशन के संस्थापक हैं)

राष्ट्रीय सहारा से साभार

आर्य विद्वान डॉ. वेद प्रताप वैदिक की पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ के साथ अन्तरंग बातचीत

दैनिक भास्कर, 8 जून 2013 मियॉ नवाज शरीफ के इस तीसरे प्रधानमंत्री–काल में क्या भारत–पाक संबंधों में कोई बुनियादी सुधार होगा? यह प्रश्न आजकल मुझसे पाकिस्तान का हर नेता और टीवी एन्कर पूछता है। मियां नवाज शरीफ मूल रुप से पाकिस्तान के दक्षिणपंथी और राष्ट्रवादी तत्वों के नेता माने जाते हैं। हम यह कह दें तो खास हर्ज नहीं कि वे पाकिस्तान की भाजपा के नेता हैं। उन्होंने ही अफगानिस्तान में तालिबान को आगे बढ़ाया था और उन्होंने ही भारत के लिए जवाबी एटमी धमाका किया था। उनके दूसरे प्रधानमंत्री–काल में ही कारगिल–युद्ध हुआ था। उनके अपने तख्ता–पलट के पहले तक यह माना जाता था कि फौज के साथ किसी भी पाकिस्तानी नेता के घनिष्ट संबंध हैं तो वे मियां नवाज के हैं।

लेकिन मियां नवाज ने ही पहल की थी कि जिसके कारण प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी पाकिस्तान गए थे। अटलजी न केवल 'मीनारे–पाकिस्तान' पर गए बल्कि उन्होंने घोषणा भी की थी कि भारत पाकिस्तान के अस्तित्व को स्वीकार करता है। उनकी इस घोषणा से पाकिस्तान में पहली बार यह विश्वास जमा कि भारत पाकिस्तान को खत्म नहीं करना चाहता। भारत और पाकिस्तान के संबंधों की असली जड़ यही है। हर पाकिस्तानी के दिमाग में यह बात ठूंस–ठूंसकर भर दी गई है कि भारत के नेताओं ने 1947 का बंटवारा अभी तक स्वीकार नहीं किया है। यदि भारत हमला करेगा तो पाकिस्तानियों को कौन बचाएगा? जाहिर है कि फौज बचाएगी! पाकिस्तान के लोकतंत्र पर फौज इसीलिए भारी पड़ती है। इसी कारण नेताओं की मीठी–मीठी घोषणाओं के बावजूद दोनों देशों में संबंध–सुधार नहीं होता।

क्या फौज इस बार भी भारी पड़ेगी?शायद नहीं। पिछले पांच वर्षों में आसिफ जरदारी की सरकार इतनी कमजोर रही कि फौज चाहती तो उसे निगल जाती। लेकिन जनरल अशफाक परवेज कयानी के नेतृत्व में पाकिस्तानी फौज अपनी मर्यादा में रही। यह भी ठीक है कि बलूच नेता अकबर बुगती की हत्या, लाल–मस्जिद कांड, कराची नौसैनिक अड्डे का घेराव, उसामा बिन लादेन की हत्या आदि वे घटनाएं हैं जिन्होंने पाकिस्तानी फौज का दबदबा कम कर दिया था लेकिन यह सत्य है कि पांच साल तक एक लोकतांत्रिक सरकार लगातार चलती रही, ऐसा पाकिस्तान में पहली बार हुआ। अब जबकि मियां नवाज ने अपने स्पष्ट बहुमत की सरकार बना ली है तो यह सरकार तो जरदारी की गठबंधन सरकार से ज्यादा मजबूत है। फौज इस पर हाथ कैसे डालेगी?और फिर नए सेनापति की नियुक्ति शीघ्र ही खुद मियां नवाज करेंगे।

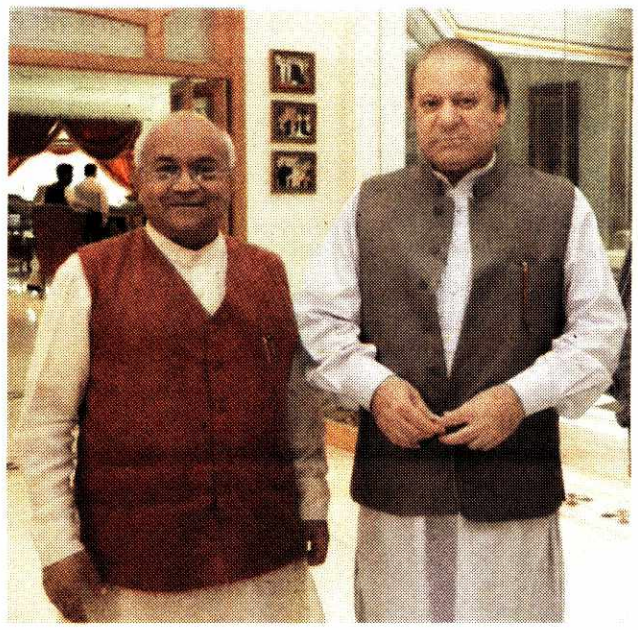

मियां नवाज पंजाबी हैं। वे कोई सिंधी या बलचू या पठान नहीं हैं। वे उस पंजाब की आवाज हैं, जो सब प्रांतों से बड़ा है। अकेले पंजाब की जनसंख्या शेष सारे पाकिस्तान से ज्यादा है। पंजाब को ही भारत से सबसे ज्यादा खतरा दिखाई पड़ता है, क्योंकि वही भारत के सीमांत पर स्थित है। बाकी प्रांतों के कई जन–नेताओं ने मुझसे कहा कि वे भारत से कोई खतरा महसूस नहीं करते। इसीलिए भारत के साथ यदि पूरे आत्म–विश्वास के साथ कोई बातचीत कर सकता है तो वह मिया नवाज ही है।

यह मियां नवाज का आत्म–विश्वास था कि उन्होंने कह दिया था कि उन्हें बुलाया नहीं गया तो भी वे भारत जाएंगें और उन्होंने अपने शपथ–समारोह में भारतीय प्रधानमंत्री को भी आने के लिए कह दिया था। भारत की तरफ से गर्मजोशी की कमी का मतलब यहां यह लगाया जा रहा है कि अब मियां नवाज को अपना एक–एक कदम फूंक–फूंककर रखना चाहिए।

शायद इसीलिए उन्होंने अपनी शपथ के बाद दिए गए प्रथम भाषण में भारत का जिक्र तक नहीं किया। मैंने जब यहां विदेश मंत्रालय के उच्च अधिकारियों से इसका कारण पूछा तो उन्होंने कहा कि वे जब संसद में अपना नीति–वक्तव्य देंगे, तब शायद विस्तार से बोलेंगे। स्वयं मियां नवाज ने मुझसे हुई पहली मुलाकात में कहा था कि युद्धों और मुठभेड़ों के दिन लद गए। अब हम दोनों मुल्कों को मिलकर नए एशिया के निर्माण में जुट जाना चाहिए।

वास्तव में मियां नवाज ने परमाणु–बम बनाकर पाकिस्तान के दिल से यह डर निकालने की कोशिश की थी कि भारत उसे खा जाएगा। परमाणु बम के बावजूद करगिल–युद्ध हो गया, क्योंकि फौज ने सोचा कि यह आखिरी मौका है कि डंडे के जोर पर कश्मीर को खींच लिया जाए। पाकिस्तानी परमाणु बम ने अब मियां नवाज के इस विश्वास को मजबूत किया है कि भारत से डरने की जरुरत नहीं है और साथ ही करगिल जैसे युद्ध छेड़ना बेकार है। पाकिस्तानी जनता के मन से भारत का डर निकलते–निकलते ही निकलेगा। फौज और आईएसआई का रवैया आसानी से नहीं बदलेगा। फिर भी मियां नवाज के प्रधानमंत्री बनने पर पाकिस्तानी चित्त–शुद्धि की यह प्रक्रिया जरा तेज होगी।

यों भी पाकिस्तान अपनी आंतरिक समस्याओं में इस बुरी तरह उलझा हुआ है कि उसे भारत से युद्ध छेड़ने की फुर्सत ही नहीं। चुनाव के दौरान भारत–विरोधी प्रचार लगभग हुआ ही नहीं। अपने पहले भाषण में मियां नवाज ने पाकिस्तान को समस्याओं का जंगल कहा और यह भी कह दिया कि वे पाकिस्तान की जनता को कोई सब्ज–बाग नहीं दिखाएंगे। उनका सारा ध्यान मंहगाई, बिजली संकट, भ्रष्टाचार और आतंकवाद जैसी समस्याओं पर केंद्रित है। ऐसी स्थिति में क्या वे भारत से मुठभेड़ करना चाहेंगे या उससे व्यापार आदि बढ़ाना चाहेंगे?उनकी पार्टी की सरकार सिर्फ पंजाब प्रांत में ही बनी है। अन्य प्रांतों को साथ लेकर चलना भी उनकी प्राथमिकता है। वे भारत से भिड़ेंगे या अपनी राजनीतिक गुत्थियां सुलझाएंगे।

मियां नवाज का यह भी सौभाग्य है कि संसद और अन्य प्रांतों में इस समय उनके जितने भी विरोधी हैं, उनमें से भारत के विरुद्ध दुश्मनी की घोषणा करनेवाला कोई भी प्रमुख दल या नेता नहीं है। अर्थात उन पर भारत से संबंध बिगाड़ने का दबाव बहुत कम रहेगा। पाकिस्तानी संसद में एक भी शब्द भारत के विरुद्ध नहीं बोला गया। पाकिस्तान के लगभग सभी नेताओं ने मुझे आश्वस्त किया है कि यदि मियां नवाज भारत से संबंध–सुधार की कोई बड़ी पहल करेंगे तो वे उसका समर्थन करेंगे लेकिन लगभग हर नेता और बुद्धिजीवी ने यह भी पूछा है कि आपकी सरकार क्या इस लायक है कि वह कोई पहल कर सके?

(लेखक, भारतीय विदेश नीति परिषद के अध्यक्ष हैं), साभार–दैनिक भास्कर

अनन्य सुधारक दयानन्द

– ओम प्रकाश शास्त्री

यूँ तो संसार में अनेक सुधारक जन्में।
पर दयानन्द सा सुधारक न हुआ इस जग में।।
साधना भट्टी में अपने को तपाया ऐसा।
जिसकी ज्वाला ने किया, दूर, अज्ञान अन्धेरा सारा।।

हम न भूलेंगे कभी ऋषि के किये उपकारों को।
उन्होंने जो देश जगाया निज श्रेष्ठ व्याख्यानों से।।1।।
जागे वे रात सारी, सच्चे शिव के दर्शन को।
उन्होंने जाना था तभी, प्रभु न मिलेंगे पाषाणों में।।2।।
घर में जब मौत हुई, मौन खड़े थे तब भी।
सोचते रहे थे वह, क्या मैं भी मरूँगा इक दिन।।3।।
निकल पड़े घर से तभी, मृत्यु पर विजय पाने को।
खोजते गुरू को रहे, अरण्यों और कान्तारों में।।4।।
शीत से डरे नहीं, भालू से डरे नहीं।
बढ़ते रहे निर्भय वे, अपने को जानने के लिए।।5।।
अन्त में गुरु विरजानन्द जी के पास पहुँचे।
व्याकरण में निपुण हुए वेदों के रहस्य जानने को।।6।।
पावन चरित्र के धनी, आजन्म रहे ब्रह्मचारी।
सत्य मारग न तज, थे जो वीर व्रतधारी।।7।।
वे थे सत्यवादी सदा, वीर तपस्वी योगी।
विषों का वमन किया, योग की क्रियाओं से।।8।।
कर्म में अनासक्त, दत्त चित्त सुधारों में।
रहेगी कीर्ति अमर, सूर्यवत् अम्बर में।।9।।
वेदों का भाष्य किया, विरोधियों को परास्त किया।
पाखण्डों का खण्डन कर, सत्य मार्ग प्रशस्त किया।।10।।
धर्म का उपदेश दिया, वेदों का प्रचार किया।
वेदों के रहस्य के ज्ञाता रहे सदा विद्वानों में।।11।।
नारियों को मान दिया, विद्यालय कन्या खुलवाये।
अनाथों के नाथ बने, अनाथालय भी खुलवाये।।12।।
गौओं की रक्षा करी, गो–करूणानिधि लिखकर।
गौशालायें भी खुली गो–माता की सेवा को।।13।।
आर्ष ग्रन्थों की पढ़ें वैदिक मारग पर चलें।
गुरुकुल भी तो खुलवाये, निज संस्कृति की रक्षा को।।14।।
भूलें ना राह सही, सत्य मारग पर चलें।
किये आर्य समाज स्थापित, वेदों की रक्षा को।।15।।
है ऋणी भारत यह रहेगा संसार सारा।
धन्य हुई भारत माता तुम जैसा रतन पाकर के।।16।।

–शंकर सदन, यू–128, शकरपुर दिल्ली–92

जीवनप्रभात के निराधार बच्चों ने की हरिद्वार की यात्रा

आर्य समाज गांधीधाम संचालित जीवन प्रभात से निराधार हुए 162 बच्चों को आश्रम दिया गया है। इन बच्चों का जीवन प्रभात में निःशुल्क, जाति–पाँति एवं बिना धार्मिक भेदभाव के अपने बच्चों जैसा लालन पालन हो रहा है।

गर्मी की छुट्टियों में हर माता–पिता अपने बच्चों को घुमाने ले जाते हैं। भूकम्प के बाद पिछले 12 वर्ष से जीवन प्रभात गांधीधाम एवं जीवनप्रभात पांडिचेरी के निराधार बालकों को छुट्टियों में विविध स्थानों पर दानदाताओं के सहयोग से पिकनिक पर ले जाते हैं। अब तक बच्चे दिल्ली, राजस्थान, गुजरात व तमिलनाडू के विविध पर्यटन स्थान घूम आये हैं। यात्रा में घूमने से बच्चों के ज्ञान में भी बढोत्तरी हुई है।

इस वर्ष इन बच्चों ने राजकोट के कुछ गुजराती परिवारों के आर्थिक सहयोग से दिल्ली, हरिद्वार, देहरादून, मसूरी के विविध स्थानों की यात्रा की। 9 दिन की इस शैक्षणिक यात्रा में बच्चों ने मार्ग में आगे वाले विविध स्थानों को भी देखा। मार्ग में आने वाले स्टेशनों पर जीवन प्रभात के सहयोगी दानदाताओं ने बच्चों का सत्कार किया और भोजन व नाश्ते की व्यवस्था की।

दिल्ली में बच्चों ने इण्डिया गेट, कुतुबमीनार, लालकिला, बहाईमन्दिर, अक्षरधाम मंदिर, मेट्रो ट्रेन, दिल्ली विधानसभा भवन आदि स्थानों में भ्रमण किया। दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष डॉ. योगानन्द शास्त्री जी ने बच्चों को विधानसभा भवन में विधायकों की कुर्सी पर बैठने का मौका दिया व बच्चों को संबोधित किया और आशीर्वाद दिया कि भविष्य में आपमें से कोई इस कुर्सी की शोभा बढ़ायें। बच्चों ने भी मंत्री जी को गांधीधाम आने का न्यौता दिया। हरिद्वार में हरकी पौड़ी, गंगा आरती, विविध घाटों के दर्शन किये। पतंजलि योग पीठ में आचार्यकुलम विद्यालय, फार्मेसी की मुलाकात ली। स्वामी रामदेव जी ने बच्चों को सम्बोधित किया व आशीर्वाद दिया। महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुयायी स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी द्वारा 800 एकड़ जमीन पर स्थापित 112 साल पुराना गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय देखा। बच्चों ने कुलपति प्रो. स्वतन्त्र कुमार जी से भी मिलकर उनसे आशीर्वाद प्राप्त किया। ऋषिकेश में ही परमार्थ आश्रम के संस्थापक स्वामी चिदानन्द जी से आशीर्वाद प्राप्त किया।

175 बच्चों को विविध स्थानों पर घुमाना हमारे लिए एक चुनौती थी परन्तु यात्रा निर्विघ्न पूरी होने पर आर्य समाज गांधीधाम के प्रधान श्री पुरुषोत्तमभाई पटेल, कोषाध्यक्ष श्री गुरुदत्त शर्मा और महामंत्री श्री वाचोनिधि आर्य ने ईश्वर का धन्यवाद व्यक्त किया। यात्रा के दौरान दाता परिवार एवं आर्य समाज के ट्रस्टीगण साथ रहे थे।

– वाचोनिधि आर्य, महामंत्री, मो.:–09428006232

कमजोर नहीं चूड़ी वाले हाथ

– संध्या राय चौधरी

विरोध और गुस्सा इजहार करने का सबका अपना–अपना तरीका होता है। यदि वही तरीका किसी खास वर्ग के लिए नापसंदगी का कारण बन जाए तो उस तरीके को बदलना जरूरी है। पिछले दिनों कई ऐसी घटनाएं हुई जिनमें लोगों का गुस्सा सड़कों पर उतरा और उन्होंने जिम्मेदार लोगों को जी भरकर कोसा। मासूम गुड़िया के रेप के विरोध में तमाम संगठनों, जिनमें महिलाएं भी शामिल थीं, उन्होंने पुलिस कमिश्नर और पुलिस जवानों के सामने चूड़ियां लहराते हुए ललकारा था कि लो, हाथों में चूड़ियां पहन लो। ये दृश्य सभी टीवी चैनलों पर दिखाए गए। लेकिन इस तरीके की खिलाफत विरोध–स्थल पर मौजूद जेएनयू की छात्राओं ने सख्ती से किया कि क्या चूड़ियां पहनना कमजोरी और कायरता की निशानी है। ये तो खैर आम लोग थे लेकिन कभी–कभी जिम्मेदार लोगों की जुबान से भी यह शब्द निकल जाता है–हमने हाथों में चूड़ियां नहीं पहन रखी हैं। अकसर यह मुहावरा तब सुनने में आता है जब सक्षम लोग अपनी ताकत का प्रदर्शन करना चाहते हैं। जैसे सेनाध्यक्ष जनरल विक्रम सिंह का यह कहना कि हमने कोई चूड़ियां नहीं पहनी हैं, हम आतंकवादियों को मुंहतोड़ जवाब देंगे। नवजोत सिंह सिद्धू का ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ियों के लिए व्यंग्यात्मक ढंग से कहना कि शायद इन दिनों ऑस्ट्रेलिया के खिलाड़ियों ने हाथों में चूड़ियां पहन रखी हैं तभी तो वे अच्छा खेल नहीं पा रहे हैं। चूड़ी पहनने का इस तरह जिस प्रसंग में उल्लेख किया जाता है, क्या उस पर आपत्ति नहीं की जानी चाहिए?क्या चूड़ियां पहने हाथ निशक्त और कमजोर होते हैं?चूड़ियां तो महिलाओं की पहचान से जुड़ी हैं

इतिहास

इतिहास गवाह है कि रानी लक्ष्मीबाई, रानी दुर्गावती जैसी वीरांगनाओं ने दुश्मनों से लोहा लेते समय चूड़ियां अवश्य पहनी होंगी। चूड़ी तो भारतीय स्त्री के संस्कार और परंपरा को दर्शाने वाला गहना है, जिसे पहनकर कोई भी स्त्री सौभाग्यशाली मानी जाती है। तो कैसे चूड़ी को कायर और डरपोक की निशानी समझा जाता है?बड़े आश्चर्य की बात है कि स्वयं महिलाएं भी जाने–अनजाने विरोध– प्रदर्शन के तौर पर पुरुषों को चूड़ियां भेंट करती हैं। ऐसा करके स्त्री स्वयं को कमजोर और कमतर आंकती है । भारत की सबसे सशक्त महिला इंदिरा गांधी ने क्या कभी चूड़ियां नहीं पहनी होंगी?चंदा कोचर, इंदिरा नूई, नीता अंबानी, प्रतिभा पाटिल जैसी सभी सशक्त महिलाएं क्या चूड़ियां धारण नहीं करती होंगी, तो क्या वे एक कमजोर वर्ग का प्रतिनिधित्व करती हैं?संसद में जोर–शोर से महिला नेता विरोधस्वरूप अपनी बात पेश करती हैं तब भी उनके हाथों में चूड़ियाँ होती हैं, तो क्या ऐसा करते समय उन्हें चूड़ियां उतारनी चाहिए। 'क्रेन मशीन' किरण बेदी द्वारा गुंडों पर डंडा चलाते समय यदि उनके हाथों में चूड़ियां होती तो क्या उनके हाथ कमजोर पड़ जाते?

कैसे शर्मनाक मानें

ये कैसी तुच्छ मानसिकता है। आज देश में हर क्षेत्र में हर मोर्चे पर महिलाएं अपनी प्रगतिशीलता का डंका बजा रही हैं, तो क्या वे चूड़ी नहीं पहनती होंगी?संस्कार के तौर पर पहनी जाने वाली चूड़ियों का इस तरह मखौल उड़ाना स्त्री की अस्मिता और उनके आत्मसम्मान पर चोट है। कितनी ही तस्वीरें हैं जब चूड़ी पहने हाथ पत्थर तोड़ते हैं, खेतों में हल, ट्रक चलाते हैं, आठ–आठ कोस दूर से पानी भरकर लाते हैं, विदेश में बड़े– बड़े मंच पर अपनी बात रखते हैं, तब यही गहना उनकी सशक्त छवि प्रतिपादित करता है। अर्धसैन्य बल की महिलाएं भी हथियार चलाते समय कलाई में कुछ न कुछ प्रतीकात्मक धारण किए होती हैं क्योंकि यह किसी भी महिला की संपूर्णता की निशानी है। जब राष्ट्रीय विकास योजनाओं और बजटिंग में लैंगिक समानता का मुद्दा जोर–शोर से उठाने की बात की जाती है तो फिर कैसे चूड़ी जैसी वस्तु को शर्मनाक वस्तु के तौर पर पेश किया जाता है?

सुंदरता और शुभता की निशानी

नारी का पहनावा तो उसके चरित्र का आईना है। हमारे देश में चूड़ियां किसी भी महिला के आत्मसम्मान, गौरव और उसकी सुंदरता का प्रतीक हैं। उत्तर प्रदेश में विवाह के अवसर पर हरे रंग की कांच की चूड़ियाँ पहनाई जाती हैं। ब्रज प्रदेश में विवाह के दिन सभी सुहागिन महिलाओं को चूड़ियां पहनाने की प्रथा आज भी प्रचलित है। हरी कांच की चूड़ियाँ पहनने से शीघ्र शुभ फल प्राप्त करने में सफलता मिलती है। संतान के जन्म के अवसर पर भी हरी कांच की चूड़ियाँ पहनना शुभ माना जाता है। करवा चौथ, हरतालिका तीज, होली–दीपावली, भैया दूज आदि त्योहारों पर नई सुंदर चूड़ियाँ पहनना सौभाग्य का सूचक होता है। सावन मास में तो चूड़ियों की बहार छा जाती है। हरतालिका तीज पर बालिकाएं, विवाहिता सभी रंगीन कामदार चूड़ियां पसंद करती हैं। क्या सुंदरता के लिए पहना जाने वाला आभूषण महिलाओं की कमजोर छवि को प्रदर्शित करता है, क्या इस मुहावरे का प्रयोग करना जरूरी है?बल्कि इसके विपरीत महिलाओं को यह कहना चाहिए कि देखो..हमारे हाथों में चूड़ी के रूप में एक अस्त्र मौजूद है जो किसी पर कभी भी प्रहार कर सकता है।

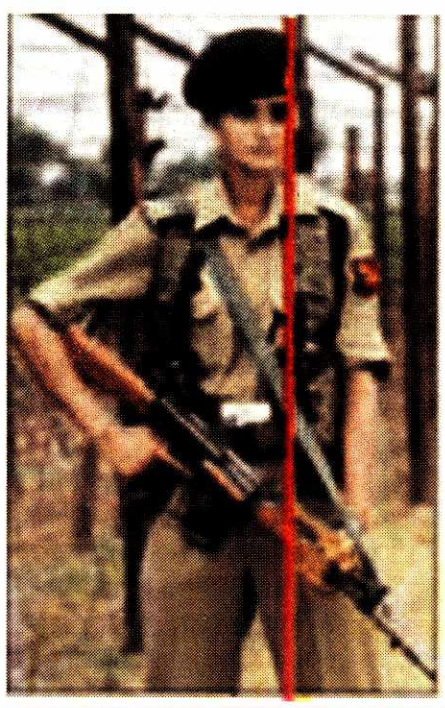

पहनी जाती है हर देश में

चूड़ियां सिर्फ पति के प्रति वफादारी और निष्ठा जाहिर करने का जरिया नहीं हैं। चूड़ियां न सिर्फ हिन्दू, बल्कि मुस्लिम और अन्य धर्म की स्त्रियां भी पहनती हैं। इतना ही नहीं, विश्व भर में अपने धर्म और परंपरा के हिसाब से महिलाएं चूड़ियां पहनती हैं। हां, उसका नाम भले ही बदल जाए लेकिन स्थान तो वही हाथ में होता है। चूड़ियां पहनावे का हिस्सा हैं, आभूषण हैं, श्रृंगार की वस्तु हैं। इंसान बहुत सारी चीजें आत्मसंतुष्टि के लिए करता है। अच्छे कपड़े पहनना, अच्छा दिखना यह इंसान की प्रकृति है किसी भी महिला की कलाई में चूड़ी, कंगना आदि शोभा ही देतेहैं।

अस्त्र भी है चूड़ी

लोग कहते हैं कि भावार्थ पर जाइए, शब्दों पर नहीं। यह तो बस मुहावरा है। भावार्थ जरूरी है, लेकिन शब्दों का चयन भी तो समझदारी से किया जाना चाहिए। हमें ऐसी बातें मजाक–मजाक में भी नहीं कहनी चाहिए जो किसी पर प्रहार करें, भावनाओं को ठेस पहुंचाए और भेद पैदा करें। चूड़ियां नहीं पहनी हैं, मैं हिजड़ा नहीं हूं, अंधा या बहरा है क्या?ये सब बातें लोग अकसर कहते हैं, लेकिन इसे रोकने की जरूरत है। भले ही आपका कहने का मतलब कुछ और होता है लेकिन ये शब्द उन लोगों का अपमान है, जिनसे ये जुड़े हुए हैं। विवाह संस्कार के समय लड़की को चूड़ियाँ धारण करवाते समय यह सीख दी जानी चाहिए कि चूड़ी उसका अस्त्र और शस्त्र है। श्रृंगार, समृद्धि और सौभाग्य का सूचक है जिसे पहन वह हर प्रतिकार का दृढ़ता से सामना करेगी।

डी. ए. वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी के उपाध्यक्ष तथा हिन्दी प्रकाशन के पुरोधा

श्री विश्वनाथ जी नहीं रहे

हिन्दी प्रकाशन के पुरोधा तथा धर्म की बलिवेदी पर शहीद होने वाले हुतात्मा महाशय राजपाल जी के सुपुत्र श्री विश्वनाथ जी का दिनांक 16 जून को सायं 4 बजे निधन हो गया। वे 93 वर्ष के थे।

27 जुलाई 1920 को लाहौर में जन्में श्री विश्वनाथ जी अर्थशास्त्र में एम. ए. थे। श्री विश्वनाथ जी आजीवन विभिन्न सामाजिक गतिविधियों में निमग्न रहे। उनके निधन से आर्य समाज, डी. ए. वी. संस्थाओं तथा प्रकाशन के क्षेत्र को गहरा झटका लगा है।

वे पिछले 65 वर्षों से प्रकाशन क्षेत्र से जुड़े रहे। श्री विश्वनाथ जी को किशोर अवस्था में ही प्रकाशन क्षेत्र में आना पड़ा जब उनके पिता महाशय राजपाल जी की एक मतान्ध कट्टरवादी ने हत्या कर दी।

1947 में देश के विभाजन के पश्चात् विश्वनाथ जी ने दिल्ली में पुनः 'राजपाल एण्ड सन्स' को स्थापित किया। थोड़े ही समय में यह हिन्दी के प्रायः सभी प्रसिद्ध साहित्यकारों का सर्वप्रिय प्रकाशन संस्थान बन गया। अग्रणी प्रकाशक होने के नाते अमेरिका ने उन्हें अमेरिकी प्रकाशन व्यवसाय को देखने–समझने के लिए आमंत्रित किया। तत्पश्चात् अपने छोटे भाई श्री दीनानाथ के साथ मिलकर उन्होंने 'हिन्द पॉकेट बुक्स' की स्थापना की और अंग्रेजी साहित्य का प्रकाशन 'ओरिएन्ट पेपरबैक्स' के नाम से प्रारम्भ किया।

विश्वनाथ जी अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ और 'फेडरेशन ऑफ इण्डियन पब्लिशर्स' के अध्यक्ष रह चुके हैं। आपने अनेक भारतीय प्रकाशकों मण्डलों का विभिन्न देशों में नेतृत्व किया।

विश्वनाथ जी प्रकाशन को एक रचनात्मक कला और व्यवसाय तथा लेखकों से अपने आत्मीय सम्बन्धों को अपनी मूल्यवान उपलब्धि मानते हैं। स्वर्गीय बच्चन जी, दिनकर जी, डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन, रंगेय राघव, आचार्य चतुरसेन, मोहन राकेश सबके साथ उनके मधुरतम सम्बन्ध रहे। ऐसे ही मधुर सम्बन्ध उनके वर्तमान लेखकों से भी थे।

वर्तमान में विश्वनाथ जी का अधिकांश समय शिक्षण क्षेत्र में व्यतीत हो रहा था। डी. ए. वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष होने के नाते भारत में फैले 700 डी. ए. वी. शिक्षण–संस्थानों के नीति–निर्धारण और प्रबन्धन में वे प्रतिदिन समय देते थे। इसके अतिरिक्त समाज सेवा में जुटे लाला दीवानचन्द ट्रस्ट और राजपाल एजूकेशन ट्रस्ट के वे अध्यक्ष भी रहे।

कविता लेखन से उनका सम्बन्ध पिछले मात्र तीन वर्षों से ही हुआ था। इस अवधि में उनहोंने अंग्रेजी और हिन्दी में सैकड़ों कविताएँ लिखी हैं। 'अंतरा' उनकी हिन्दी कविताओं का प्रथम संग्रह है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी अग्निवेश जी ने समस्त आर्य जगत की ओर से उनके निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए कहा कि श्री विश्वनाथ जी के निधन से आर्य साहित्य के प्रकाशन में महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाला जाज्वल्यमान नक्षत्र अस्त हो गया है। उनके जैसे निःस्वार्थ, कर्मठ, समाजसेवी विरले ही होते हैं। परम पिता परमात्मा उनको सद्गति प्रदान करें तथा पारिवारिक जनों को उनके पद्चिन्हों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें।

हमारे राज में दारू नहीं

— डा0 ब्रह्मदेव शर्मा

शराबनोशी का स्वरूप

शराबखोरी अब किसी व्यक्ति विशेष की कमजोरी मात्र नहीं रह गई है, अवामी जिन्दगी के लिए अब इसका स्वरूप अभिशाप, एक लानत बन गया है। व्यक्ति को इस कमजोरी

— डा0 ब्रह्मदेव शर्मा

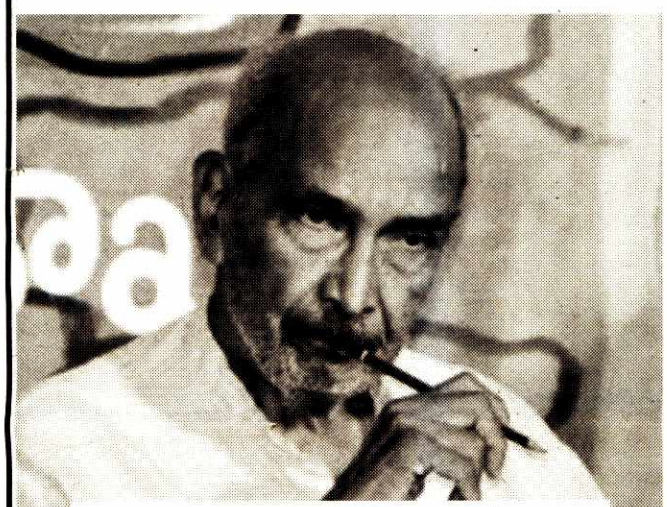

से, इस कदाचार से सदाचार की ओर बढ़ने के हर मनीषी ने उपदेश दिए, लेकिन अब तो हम समय–समय पर शराबबन्दी के लिए उग्र आन्दोलन, खासकर महिलाओं के आन्दोलनों का सिलसिला उठते–उठाते देखते रहे हैं। विगत चौसठ सालों में शराब के फलते–फूलते उद्योग का प्रदूषण गाँव दर गाँव गली–कूचों में इस कदर छा गया है कि एक–एक साँस के लिए अब आन्दोलन फूट पड़ते हैं – एक बार चट्टान से टकराकर एकाकी बिखरता दिखाई देता है ..... फिर से टकराने की जिद लेकर। यह परिदृश्य हमारी आँखों के सामने है।

यह सही है कि नशा किसी व्यक्ति विशेष की कमजोरी बन सकता है, किसी को बुरी संगत के चलते शराबखोरी या अन्य किसी नशे की लत पड़ सकती है। यह एक बात है। ऐसे दुराचार से निजात पाने के लिए समाज के अन्दर से हलचल और समाज का अपना प्रभाव, नैतिक बल ही मात्र कारगर उपाय है।

शराब उद्योग और सरकार का रिश्ता

लेकिन, यहाँ मामला अब कुछ अधिक पेचीदा हो गया है। इसकी शुरूआत गुलामी के दौर में हुई। शराबनोशी या दूसरे नशे पहले भी थे, परन्तु वे उद्योग नहीं थे। आज देश में जो खरबों की मालियत का शराब उद्योग राक्षस के रूप में खड़ा हो गया है उसकी शुरुआत ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा नशाखोरी के व्यापार से हुई थी, जिसे बाद में ब्रिटिश हुकूमत ने एक नीति के रूप में अपनाया। अतः यहाँ भी, चीन की तरह नशाखोरी के कदाचार की अलग ही कहानी बन गई है। पहले, देश पर कब्जा जमाते ही ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने यहाँ नशाखोरी को सहज धन लूटने का दुधारू धन्धा बनाया और फिर अंग्रेज हुकूमत ने आबकारी को अपनी आय का स्त्रोत बनाने की निकृष्ट नीति ही अपना ली। इस तरह यहाँ शराब उद्योग की नींव पड़ी, जिस उद्योग ने भारत के लोगों को अपना 'बाजार' बनाया और इस तरह से शराबखोरी को उसका सशक्त प्रायोजक मिल गया।

स्वतन्त्र भारत की सरकार ने भी इसी राह का खुलकर इस्तेमाल किया। अब शराब उद्योग देश के राजनीतिक–सामाजिक दिशा निर्धारण में भारी निहित स्वार्थ बन गया है। आज शराबखोरी की सबसे बड़ी और ताकतवर प्रायोजक सरकार है, इसकी जड़े गहराई में पैठ चुकी है। अब तो विदेशी मुद्रा कमाने का प्रलाप, इसके लिए पर्यटन उद्योग और इसके एक अंग के रूप में मनोरंजनकर्मी सैक्सकर्मी का 'कामगार दल' खड़ा हो गया। विदेशी पूंजी निवेशकों को भी हरेक सुविधाओं से भरपूर कहीं जापानी नगरी, तो कहीं थाइलैण्ड के आधुनिक चकलाघरों और जुआ–घरों के बसाने की बाढ़ आ रही है। इनके लिए सदियों से बसे बसाये गाँव पर गाँव उजाड़े जा रहे हैं। दलील आज भी 'विकास' की है, उसी विकास की जिसकी कहानी सुनते–सुनते आधी शताब्दी बीत गई है। आर्थिक और सामाजिक न्याय अभी भी आम आदमी के लिए दूर की कौड़ी जैसा बना हुआ है। अंग्रेज हुकूमत के खात्मे पर न्याय का जो सपना संजोया था वह तो नए हाकिमों के करतब देखकर पहले दो दशकों में ही टूट चुका था, अब इन चार दशकों में वर्तमान व्यवस्था से अवाम की निराशा जड़ों तक चली गई है।

आरम्भ में अंग्रेज हुकूमत का घाव अवाम के जहन पर ताजा था। सो आर्थिक सामाजिक न्याय की तब तक मिसाल बने सोवियत संघ की उपमा दे देकर भारत के नये हाकिमों ने "विकास" की हड़बड़ाहट में समता के न्याय को पीछे धकेल दिया। पहले विकास हो उसकी नींव मजबूत हो, न्याय की बात बाद में तय हो जायेगी। इस

दलील के चलते चौसठ साल बीत गए। जब उस पुराने क्रूर शोषण दमन की टीस ढीली पड़ गई तो ये हाकिम अपने असली रूप में सामने आकर खड़े हैं। देश के निर्लज्ज अमरीकीकरण की खातिर उसी "विकास" की हड़बड़ाहट में 85 प्रतिशत जनसंख्या के लिए आर्थिक सामाजिक न्याय का सवाल पूरी तरह दर किनार हो गया है। अब खुलेआम सरकार मात्र इन 15 प्रतिशत सरमायेदार व उनके ताबेदार लोगों की सेवा को ही अपना मुख्य काम मानकर चल रही है। हैरान होने की बात ही नहीं है कि आज देश का पूरा राजनीतिक परिदृश्य इसी एक सूत्री एजेण्डे का ताबेदार बन बैठा है। 85 प्रतिशत जनता के प्रति अपनी जिम्मेदारी से हाथ से झाड़कर इन्हें अपने रजिस्टर से खारिज कर दिया है। उनकी कीमत पाँच साल में एक पर्ची की मात्र बची है।

एक जमाना था जब देश के राजनीतिक नेतृत्व में एक पक्ष विकास के लिए आर्थिक सामाजिक न्याय की हिमायती था। यह पक्ष समाज में समरसता, सदाचार एवं सामाजिक–पारिवारिक मूल्यों के महत्त्व को आंकता था। वह नशाखोरी को सामाजिक लानत मानता था। वह गुलामी के दौर में अंग्रेज व्यापारियों तथा इनकी पोषक सरकार की नियत को भांपता था। वह अंग्रेजी सरकार यहाँ की अपनी प्रजा को नशाखोरी की लत में फंसा कर शोषण दमन की चक्की को निरापद पीसने में ही दिलचस्पी रखती थी। इस पक्ष के नेतृत्व को याद था कि किस तरह अंग्रेज व्यापारियों ने चीन देश के अवाम को अफीम का चस्का लगाने के लिए वहाँ के एक सद्बुद्धि राजा के खिलाफ ग्यारह साल तक युद्ध लड़ा था। इतिहास में यह अफीम युद्ध के नाम से जाना जाता है। आजादी के बाद हमारे देश के नेतृत्व की सबसे बड़ी कमजोरी यह रही कि वह भी नशाबन्दी या शराबबन्दी को सरकारी हुकम की ताकत पर ही लागू करने पर भरोसा रखता रहा। हर बात में लोगों के फैसले की दुहाई देने वाले गाँधी बाबा भी कह गए कि "अगर मैं एक दिन के लिए राजा या तानाशाह बन जाऊँ तो सबसे पहले एक ही काम करूँगा, पूरे देश में नशाबन्दी कर दूँगा।"

राजनीतिक नेतृत्व का दूसरा पक्ष कहता है "आगे बढ़ते चलो। देखो, अमरीका, जापान कहाँ तक पहुँच गए हैं। आदर्श और सदाचार की बात बाद में कर लेंगे। अभी ऐसी पोंगापंथी के लिए समय कहाँ है?" अब तो तर्क यहाँ तक पहुँच गया है कि "पीने पिलाने से काम निकलता है तो हर्ज क्या है?" अच्छे किस्म की शराब नहीं होगी, बॉबकट, अधनंगी और ऊँची हील पर इठलाती सजी–संवरी सुन्दरी तथा जुआघर और एकड़ों में फैला गोल्फ का मैदान नहीं होगा तो ऐसे मनोरंजन के आदी पश्चिमी देशों के धनवान बिदक जायेंगे। विकास को चोट लगेगी, इसी विकास की रिसन से ही तो अवाम की जिन्दगी सुधरेगी।

हड़बड़ी वाले इस माहौल में नेतृत्व के इन दोनों पक्षों के बीच चौसठ साल से उठापटक चलती रही है। कभी गाँधी बाबा वालों का सरकार में बैठने का दाव लग गया तो सरकारी फरमान जारी हो गया : "कोई नहीं पियेगा।" उनका जोर कुछ कम हुआ और पीने वालों का पक्ष सरकार पर हावी हो गया तो घर द्वार पर ही ठेके खुल गये। आज तो गाँव–गाँव में दारू के ठेलों की बाढ़ है।

यहाँ महत्त्वपूर्ण प्रश्न है कि आखिर सरकार और जनता का रिश्ता क्या है?क्या सरकार स्वयंभू है, जब चाहे जो फैसला करे?यह गलत है। सच में, जनता स्वयंभू है। सरकार की सारी शक्ति का उद्गम/स्त्रोत जनता है। जनता प्रजा नहीं है। राजा ने जब अपने आपको खुदाताला का प्रतिनिधि घोषित कर दिया था उस जमाने में अवश्य जनता की स्थिति प्रजा की हो गई थी। लेकिन अब इस विषय पर सोच समझ बहुत आगे बढ़ गई है। ऐसी हालत में जनता का स्वयंभू स्वरूप स्वीकार करना पड़ रहा है। लेकिन व्यवहार में अभी भी सरकार का नजरिया स्वयंभू सत्ता का बना हुआ है। इसे जड़ से चुनौती देने की जरूरत आ खड़ी हुई है। अब सत्ता समाज के अपने ताने–बाने को ही तोड़ने पर लग गई है। उसके जीवन–यापन के बुनियादी साधन–जल, जंगल जमीन पर ही उसने एकछत्र अधिकार जमा लिया है। इनके बंदरबाट को सत्ता अपना अधिकार बता रही है। नशाखोरी का सवाल भी ऐसा ही मामला है जो समाज के अपने कर्म–क्षेत्र का अंग है। देश के नागरिक चाहते हैं कि सरकार 'शराब उद्योग' को संरक्षण देना बन्द करे और उससे अपना हाथ पीछे खींचे, शराब के व्यापार को अनैतिक और गैर–कानूनी घोषित करें। बाकी मामला समाज का अपना है।

लेखक द्वारा लिखित छोटी सी पुस्तिका
"हमारे राज में दारू नहीं"
–महिला शक्ति से साभार

ईमेलः bharatjanandolan@gmail.com

आवश्यकता है

आर्य समाज, हापुड़, उत्तर प्रदेश को विद्वान कुशलवक्ता, वैदिक संस्कार कराने में निपुण, अनुभवी, गृहस्थी धर्माचार्य (पुरोहित) की आवश्यकता है।

सुविधा युक्त निवास, दक्षिणा सामंजस्यानुसार शीघ्र सम्पर्क/आवेदन करें।

आनन्द प्रकाश आर्य, प्रधान, मो.:–09837086799

सम्माननीय विद्वानों तथा सुधी पाठकों की सेवा में

आत्म–निवेदन

वैदिक सार्वदेशिक समूचे विश्व के आर्यजनों के लिए लोकप्रिय एवं मार्गदर्शक पत्र है कोटि–कोटि आर्य जनता की भावनायें इस पत्र के माध्यम से प्रेरित होती है। आर्यजनों की भावनाओं को और अधिक प्रेरित और उत्साहित करने के उद्देश्य से आर्य जगत के यशस्वी विद्वानों तथा सुधी पाठकों से राष्ट्रीय सामाजिक एवं धार्मिक विचारों से ओतप्रोत विचारोत्तेजक लेख तथा अन्य सामग्री सादर आमन्त्रित है। इसके साथ ही वैदिक सार्वदेशिक आपको कैसा लगता है तथा इसको और अधिक ज्ञानवर्धक तथा प्रेरणादायी बनाने के लिए आपके सुझाव तथा प्रतिक्रिया की भी प्रतीक्षा रहेगी। कृपया अपनी प्रतिक्रिया से अवगत कराते रहें। अपने लेख सुन्दर, स्पष्ट लिखकर अथवा टाइप करवाकर ई–मेल अथवा डाक द्वारा भेजें तथा अपना पूर्ण पता अवश्य लिखें। धन्यवाद।

– सम्पादक

पृष्ठ–2 का शेष

जंगल बचाने की नई मुहिम

साजिश के तहत हो रहा है। इसलिए देखा जाए तो वनोपज से पैदा होने वाले राजस्व सरकारी संस्थाओं में बंदर बांट हो कर रह जाता है। अगर वनोपज जैसे तेंदुपत्ता, साल पत्ता, शहद, मोम, महुआ, चिरोंजी, बांस, बेत, आंवला वगैरह की आय सीधे–सीधे वनाश्रित समुदाय को होने लगे तो वे किसी ओर भी नहीं ताकेंगे, बल्कि अपना विकास खुद कर लेंगे। इस राजस्व को समेटने वाला केवल अकेले वनविभाग और उसकी सहयोगी वननिगम है।

सरकार ने आज तक इस क्षेत्र में किसी भी प्रकार की जनसंस्थाओं को खड़ा करने की कोशिश नहीं की है। आजादी के पहले और आजादी के बाद वनविभाग ने इस सम्पदा का दोहन करने के लिए बड़े पैमाने पर ठेकेदारी प्रथा शुरू की। वनोपज को निकालने के नाम सामुदायिक अधिकारों के बारे में कानूनी प्रावधान नहीं है और सार्वजनिक उपयोगों की भूमि जैसे चरागाह, खलिहान, वन और जलाशय राजस्व रिकार्ड में कहने को तो ग्राम सभा के खाते में दर्ज होते हैं, लेकिन उस पर राज्य का एकाधिकार है। इन राजस्व रिकार्डों में वन को वनभूमि की श्रेणी में रखा गया है, जबकि हमारे देश के किसी भी राजस्व कानूनों में वनविभाग को भूमि स्थानांतरण का किसी प्रकार का प्रावधान नहीं है, फिर भी देश की तेईस फीसद भूमि यानी करीब साढ़े सात करोड़ हेक्टेअर भूमि आजादी के बाद वनभूमि के खाते में दर्ज की गई, जिसका मालिक वनविभाग वन बैठा। सारा झगड़ा इस वनभूमि और जंगल को वन विभाग से कानूनी प्रक्रिया के तहत वापस लेने का है और इस पर खड़ा तमाम वनोपज, जो कि करोड़ों रुपये का राजस्व अर्जित करता करने की साजिश कर रही हैं, जिसका जीता जागता उदाहरण है ओड़िसा सबसे बड़े पूंजी निवेश वाली परियोजना 'पोस्को', जहाँ पर संघर्ष जारी है।

जब तक राजनीतिक रूप से समुदाय अपने समाज की जनगोलबंदी कर लाखों की तादाद में संगठित नहीं होंगे तब तक वे नवउदारवादी नीतियों के हमलों से नहीं बच पायेंगे। आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा के कार्यक्रमों को लागू करने के लिए विभिन्न स्तरों पर काम करना होगा।

वनक्षेत्र में जनवादी ढांचा खड़ा करने के लिए राष्ट्रीय वनजन श्रमजीवी मंच ने 2012 में अपने चौथे राष्ट्रीय सम्मेलन में सर्वसम्मति से तय किया था कि अपने लक्ष्य को पाने के लिए एक अखिल भारतीय यूनियन का गठन किया जायेगा, जिसके जरिए सामुदायिक नेतृत्व को

पर देश के वनों की बेइंतहा तबाही हुई। औपनिवेशिक संस्थाओं ने ग्राम सभा में सामंती, उच्च जाति और उच्च वर्ग के निहित स्वार्थों को खड़ा कर इस सम्पदा को लूटा। आज जब सरकार इस बात को स्वीकार कर रही है कि अगर वनोपज पर निर्भरशील समुदाय के पास कम से कम यह पचास हजार करोड़ का भी राजस्व आ जाए तो उनके जीवन स्तर में काफी सुधार होगा। यह सबसे बड़ा गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम होगा। तब आखिर समस्या की जड़ है कहाँ?जिन संसाधनों से औपनिवेशिक काल से बनी संस्थाएं मलाई काट रही हैं, वे आसानी से इस पर अपना नियंत्रण छोड़ने के लिए कतई तैयार नहीं हैं।

वनसंपदा को केवल वे ही लोग बचा पायेंगे जो कि उन पर निर्भर हैं और उनसे अपनी आजीविका अर्जित करते हैं। सामुदायिक अधिकारों को समुदाय को सौंपने की बात जरूर की गई है, लेकिन हमारे देश के तमाम राजस्व कानूनों में किसी भी समुदाय के है, को समुदाय के विकास और हितों के लिए इस्तेमाल करना है। इसलिए इन नई चुनौतियों को देखते हुए सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक अधिकारों की सुरक्षा के लिए संगठनों और जनसंस्थानों का नवनिर्माण जरूरी है। इस क्षेत्र में वनाश्रित श्रमजीवी समुदाय के श्रमिक संगठन और उनके द्वारा वनोपज के संग्रहण, संवर्द्धन को करने के लिए सहकारी संघ के निर्माण पर जोर दिया जा रहा है। यह काफी कठिन और पेचीदा काम है।

जाहिर है वनों से मिलने वाले राजस्व को कोई भी वनसमुदाय के हाथ सौंपना नहीं चाहेगा। ऐसा करने से रोकने के लिए सत्ता की मशीनरी तमाम हथकंडे भी अपना रही है। वनविभाग के पास जमा काले धन के माध्यम से अधिकारियों, पुलिस, दबंगों को खरीदकर और असामाजिक तत्वों से वनसमुदायों पर हमले तेज किए जा रहे हैं। और जहां पर कंपनियाँ हैं, वहाँ पर तो राज्य सरकारें ही समुदायों पर हमला राष्ट्रीय राजनीतिक पटल पर स्थापित किया जा सके। इस संगठन को बनाने में श्रमिक संगठन न्यू ट्रेड यूनियन इनिशिएटिव द्वारा भी सहयोग दिया जा रहा है। अखिल भारतीय यूनियन वनक्षेत्र में श्रम कानून, सामाजिक सुरक्षा कानून और वनाधिकार कानून को लागू कराने के लिए संघर्ष करने और वनक्षेत्र में मौजूद विविधताओं को मान्यता देते हुए एक संघीय ढांचे के तहत संघ निर्माण का काम करेगी। इस यूनियन का स्थापना सम्मेलन तीन से पांच जून को उड़ीसा में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। इसमें प्रमुख जनसंगठनों, श्रमिक संगठनों, सामाजिक आंदोलनों के साथ–साथ इक्कीस राज्यों से सैकड़ों प्रतिनिधि शामिल हुए। आज के राजनीतिक माहौल में नए संस्थानों को बनाने की पहल, श्रमिक और सामाजिक आंदालनों को ही करनी होगी। मौजूदा राजनीतिक व्यवस्था से आम आदमी का भरोसा टूट चुका है।

भ्रष्टाचार का तंत्र

— प्रवीण

आजकल खबरें आपको परेशान नहीं करतीं। वे अपनी 'शॉक–वैल्यू' खो चुकी हैं। यह एक ऐसा दौर है जिसमें हमारे पतन की कोई सीमा नहीं है। कहीं भी, किसी के जरिए कुछ भी संभव हैं। लगभग हर चीज बिकाऊ है और बिकाऊ दिख भी रही है। रेलवे के बड़े पदों को भी पैसा देकर कब्जाया जा सकता है, यह धारणा और प्रचलन केवल पवन बंसल के भांजे विजय सिंगला का पैदा किया हुआ नहीं है। अपनी सहज बुद्धि के जरिए भी आप इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि ऐसा पहले भी होता रहा होगा। यह तो भला हो उस सीबीआई अफसर का, जिसका जमीर अब तलक बिका नहीं और उसके चलते उसने यह कारवाई कर दी और हमें भी खबर हो गई।

2010 में अपने एक सर्वे के बाद ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल ने दुनिया को बताया कि भारत में सौ में चौवन लोग भ्रष्ट हैं जो अपना काम करवाने के लिए भ्रष्टाचार का सहारा लेते हैं। चाहे इसके लिए वे घूस दें या लें। आंकड़ा इससे कहीं ज्यादा है। मैं प्रतिशत में बताने की माथापच्ची में नहीं पड़ता, पर इतना जरूर कहूँगा कि ईमानदार शख्स का मिलना हमारे देश में एक 'अति दुर्लभ अपवाद' है। एक मुल्क एक समाज के तौर पर हम सदियों से चार अहम चीजों, घूस–खुशामद, सिफारिश–बख्शिश के जरिए चलते रहे हैं। आप धार्मिक और आध्यात्मिक क्षेत्र को ही देखें। तप, प्रार्थना, आस्था और पूर्ण समर्पण के तो बड़े–बड़े बखान मिलेंगे पर मन–वचन और कर्म से ईमानदार होने के लिए कोई नहीं कहेगा। मेरी बात पर यकीन न हो तो एक पूरा दिन आप धार्मिक आध्यात्मिक चैनल देखें और कोई गुरू बाबा ईमानदारी बरतने के लिए कहता मिल जाए तो बताएँ।

आप अपने इर्द–गिर्द किसी भी संस्था, संस्थान या विभाग को देखें। एकाध अपवाद को छोड़ अहम पदों पर जो भी बैठा है, उसे या तो वह पद, घूस, खुशामद, सिफारिश के जरिए मिला है या किसी सत्ता सम्पन्न ने वह पद उसे उसकी सेवा, चापलूसी, वफादारी की बख्शिश के तौर पर नवाजा है। हरेक विभाग संस्था या संस्थान में एक सत्ता केन्द्र है और उसके इर्द–गिर्द मंडराने, उसके हितों और अहं को साधने वाले पदों से नवाजे जाते हैं और जो अपने को इतना गिरा नहीं सकता, वह बेनाम गुमनाम जिंदगी गुजारने पर मजबूर हैं। हमारे नेता इसी समाज से आते हैं। आप उनमें से किसी की भी बैठक में कुछ समय गुजारिए और देखिए। आपके और मेरे जैसे ही आम आदमी रोजाना वहाँ किसी न किसी गलत काम, किसी का हक छीनने या सरकारी पैसे/नीतियों का अनुचित फायदा उठाने के प्रयोजन से सिफारिशें करवाने के लिए जाते हैं।

सदियों से इसी व्यवस्था के चलते हम आज इस स्थिति में हैं कि अधिकतर पार्टियों के सत्ता केन्द्र पर उन्हीं नेताओं का कब्जा है, जो घूस–खुशामद, सिफारिश–बख्शिश के चलते वहाँ तक पहुँचे हैं। सत्ता इन्हीं को मिलती है कभी न कभी। नतीजा, हमारे अकादमिक जगत, सभी लोक सेवा आयोग, तमाम बड़े संस्थान और उन जगहों पर, जहाँ अर्थलाभ होता है, वे लोग बैठे हैं जो वहाँ घूस–खुशामद, सिफारिश–बख्शिश के चलते काबिज हैं। एक अवाम और समाज के तौर पर हम सबको यही स्वीकार भी है। सदियों से हम इसे देख रहे हैं। इसलिए चाहे कोई भी पार्टी सत्ता में आए। घोटाले–घूसखोरी होती रहेगी। इन्हें देख हैरान–परेशान मत होइये। जो सदियों से हमारे देश में होता आ रहा है, उसे एक बड़े मंच और बड़े पैमाने पर देखने पर कैसा आश्चर्य?

मेरा मानना है कि यह खोखला और सड़ा–गला तंत्र इस समस्या का समाधान नहीं निकाल सकता। यह अभी और गलेगा–सड़ेगा। फिर एक दिन ऐसा जरूर आयेगा कि अपने पूरे तामझाम के साथ यह तंत्र भरभरा कर ढह जायेगा। यह पीड़ादायक होगा, इसमें बहुत विनाश–नुकसान होगा और कष्ट भी। पर अगर एक मुल्क और समाज के तौर पर हमें बने रहना है तो यह लाजिमी भी है। फिर एक नए–बेहतर और आस जगाते तंत्र का उदय होगा। काश, यह सब मेरे जीवनकाल में ही हो जाये। – जनसत्ता से साभार

काशी आर्य समाज का वार्षिक अधिवेशन

अपसंस्कृति के कारण संस्कारों एवं मूल्यों का क्षरण

अप संस्कृति के कारण भारतीय संस्कारों और मूल्यों का तीव्र गति से क्षरण हो रहा है, राष्ट्र का आधार सनातन हिन्दू समाज अपने ही देश में बेगाना और असहाय हो गया है। प्रखर राष्ट्रभाव को आत्मसात कर आर्यों को जगाने की आवश्यकता है जिसके लिए पूर्व की भांति पुनः आर्य समाज को आगे आना होगा। उक्त विचार काशी आर्य समाज में आयोजित उसके वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर रविवार को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के पुस्तकाध्यक्ष डॉ. जयप्रकाश भारती ने बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित करते हुए आर्यजनों के समक्ष व्यक्त किये।

श्री श्रीनाथ सिंह पटेल–प्रधान काशी आर्य समाज की अध्यक्षता में आयोजित उक्त अधिवेशन के अवसर पर काशी आर्य समाज का वार्षिक निर्वाचन भी सम्पन्न हुआ जिसमें सर्व श्री श्रीनाथ सिंह पटेल–प्रधान, डॉ. प्रकाश नारायण शास्त्री–मंत्री, अशोक कुमार आर्य, विवेक सिंह एडवोकेट, डॉ. काशीनाथ, ब्रजभूषण सिंह–उपमंत्री, डॉ. विशाल सिंह–कोषाध्यक्ष, सरोज कुमार मिश्रा–प्रचार मंत्री, डॉ. गायत्री आर्या–पुस्तकाध्यक्ष, डॉ. पुष्पावती, हरिहर सेठ–प्रतिष्ठित सदस्य तथा श्रीमती निर्मला सिंह, लालचन्द आर्य, शशि शेखर पाण्डे, दयाराम लखमानी, प्रतिभा सिंह (सोनी) संजय सिंह यादव एडवोकेट–अन्तरंग सदस्य, गिरीश खन्ना, सुरेश सेठ, सुरेश यादव एवं व शंकर प्रसाद विशेष आमंत्रित चुने गये। इसके अतिरिक्त आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा, वाराणसी तथा आर्य विद्या सभा काशी के लिए भी प्रतिनिधियों का चुनाव सम्पन्न हुआ।

अधिवेशन के प्रारम्भ में ईश प्रार्थना के उपरान्त अतिथियों का स्वागत श्री डॉ. विशाल सिंह ने किया। वार्षिक कार्य वृत्त मंत्री प्रकाश नारायण शास्त्री ने प्रस्तुत किया। धन्यवाद प्रकाश पं. ज्ञान प्रकाश आर्य ने किया। अन्त में शान्ति पाठ हुआ।

–प्रकाश नारायण शास्त्री–मंत्री

NDPSo on 21/22 जून, 2013 वैदिक सार्वदेशिक 20 से 26 जून, 2013
प्रकाशन की तिथि : 20 जून, 2013
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/12-14
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]

हथियारों से एक दूसरे को मारने के बदले आइये भूख से मरने वालों को बचाएँ

– प्रदीप सौरभ

जो देश गरीबी और भुखमरी से जूझ रहा हो उसका हथियारों की होड़ में शामिल होना कितना वाजिब है, यह यक्ष प्रश्न है, भूख से लड़ाई में बेशक हम फिसड्डी साबित हो रहे हों, लेकिन हथियारों को खरीदने और उन्हें जमा करने में हम दुनिया में अब अव्वल बन गए हैं। हाल में योजना आयोग द्वारा जारी गरीबी रेका के आंकड़े जितना चौंकाने वाले हैं, उतना ही भारत के संदर्भ में हथियारों की खरीद को लेकर द स्टॉक होम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट (सिप्री) की रिपोर्ट भी कम चौंकाने वाली नहीं है। सिप्री रिपोर्ट में कहा गया है चीन को पीछे छोड़ते हुए भारत दुनिया का सबसे बड़ा हथियार आयातक देश बन गया है। भारत वैश्विक हथियार बिक्री का दस प्रतिशत खरीदता है। स्वीडन के सुरक्षा मामलों के एक थिंक टैंक का कहना है कि पाँच वर्षों में यानी 2007 से 2011 के बीच भारत के हथियारों की खरीद में 38 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई। सिप्री की रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि 2006–07 के बीच दुनिया का सबसे बड़ा अथियार आयातक रहा चीन अब चौथे नम्बर पर चला गया है उलट इसके अब चीन अब दुनिया का छठे नम्बर का हथियार निर्यातक देश बन गया है। अब उसके आगे केवल अमेरिका, रूस, जर्मनी, फ्रांस और ब्रिटेन हैं, रिपोर्ट में इस बात का भी आंकलन किया गया है कि आने वाले 15 सालों में भारत लगभग 100 अरब डालर के और हथियार और विभिन्न प्रणालियाँ खरीदेगा।

भारत को फिलहाल किसी युद्ध का खतरा नहीं है, उसे अगर खतरा है तो देश के अंदर भूख के खिलाफ हथियार उठा रहे लोगों से हैं, ऐसे में हथियारों की होड़ में शामिल होना कितना वाजिब है, जब हमारे देश में भूख का विशाल खतरा मौजूद है।

हम गरीबी और भूख से लड़ने के नाम पर फर्जी आंकड़े दिखा कर यह बताने की कोशिश कर रहे हैं कि देश में गरीबी कम हो रही है। अगर सरकार के आंकड़े सच भी मान लिए जायें तो वह यह मान रही है कि अभी देश की तीस फीसदी आबादी गरीब है। संयुक्त राष्ट्र संघ की हंगर रिपोर्ट के इंडिया चेप्टर को देखें तो उसमें माना गया है कि भारत में अभी भी अस्सी प्रतिशत से ज्यादा गरीब हैं। देश में गरीबी को लेकर पांच तरह के अनुमान चल रहे हैं।

योजना आयोग ने गरीबी रेखा के बाबत जो ताजे आंकड़े जारी किए हैं वे बेहद शर्मनाक हैं, कहा गया है कि शहरों में 28.65 रुपये और गाँवों में 22.42 रुपये कमाने वाले को गरीब नहीं माना जायेगा। मौजूदा मंहगाई को देखते हुए इतने रुपयों में एक व्यक्ति का दो वक्त का भोजन नहीं हो सकता है। अन्य बुनियादी जरूरतें स्वास्थ्य, कपड़ा, शिक्षा आदि के बारे में इस रकम में सोचना भी बेमानी है। वैसे एक व्यक्ति को प्रतिदिन 2400 कैलोरी की जरूरत होती है, जिसे इन पैसों से पूरा नहीं किया जा सकता है।

कुपोषण से मरने वाले बच्चों की रिपोर्ट में भारत दुनिया का पहला

नम्बर का देश है। प्रधानमंत्री ने भी इस रिपोर्ट को अस्वीकार्य बताया है, योजना आयोग के ताजा आंकड़े गरीबों के साथ एक भद्दे मजाक से और ज्यादा कुछ नहीं है।

गुणीजनों, हम हथियार खरीदने में अवव्ल बन रहे हैं लेकिन गरीबी से लड़ने में हम फिसड्डी साबित हो रहे हैं। गरीबों को दी जाने वाली सब्सीडी को हटाने के लिए सरकार पर दबाव है, जबकि हम सौ अरब डालर के हथियार खरीदने की तैयारी कर रहे हैं, सरकार की मनरेगा जैसी योजना, जिसमें गरीबों को रोजगार मिलता है, उस पर सात हजार की कटौती आम बजट में की गई है, यही नहीं सरकार इस योजना के तहत बेरोजगारों को 32 दिन ही रोजगार दे पाई जबकि उसे सौ दिन देना चाहिए, कृषि पर भी सब्सीडी कटौती कर देश की अन्न आत्मनिर्भरता परहमला किया जा रहा है। देश की गरीबी गावों में ज्यादा है। किसानों की कमर तोड़ी जा रही है। नतीजन किसान आत्महत्या कर रहे हैं। विकास का यह कौन सा मॉडल है, जिसमें गरीब घटने के बजाय बढ़ रहे हैं। योजना आयोग के इन आंकड़ों के बाद सरकार यह बताने में जुट गई है कि वह जिस रास्ते पर चल रही है, उससे गरीबी कम हो रही है, लेकिन, ऐसा होता तो पूर्वोत्तर और बिहार, यूपी में गरीब कैसे बढ़ गए यानि देश में विकास समान रूप से नहीं हो रहा है। योजना आयोग के आंकड़े सरकार की गरीबों के लिए चलने वाली योजनाओं में कटौती की चाल से ज्यादा कुछ नहीं है। सरकार को चाहिए कि वह हथियारों की अंधी दौड़ में शामिल होने के बजाय देश की भूख मिटाने की दौड़ में शामिल हो।

– हिन्दी मासिक 'अग्निदूत' से साभार

भारत को फिलहाल किसी युद्ध का खतरा नहीं है, उसे अगर खतरा है तो देश के अंदर भूख के खिलाफ हथियार उठा रहे लोगों से हैं, ऐसे में हथियारों की होड़ में शामिल होना कितना वाजिब है, जब हमारे देश में भूख का विशाल खतरा मौजूद है। हम गरीबी और भूख से लड़ने के नाम पर फर्जी आंकड़े दिखा कर यह बताने की कोशिश कर रहे हैं कि देश में गरीबी कम हो रही है। अगर सरकार के आंकड़े सच भी मान लिए जायें तो वह यह मान रही है कि अभी देश की तीस फीसदी आबादी गरीब है।

प्रतिष्ठा में:–

अवितरण की दशा में लौटाएँ–
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन,
(रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002

पाठकों के पत्र तथा प्रतिक्रिया

आदरणीय स्वामी अग्निवेश जी

नमस्ते!

वैदिक सार्वदेशिक पत्रिका जिसके सम्पादक प्रो. विद्वलराव आर्य को आपने तथा कार्यकारिणी तथा विशिष्ट आर्यजनों की स्वीकृति लेकर बनाया है जो लोकतान्त्रिक दृष्टि से भी न्याय संगत है, इसके लिए मैं आपको बधाई देता हूँ।

पहले इस पत्रिका के माध्यम से ऐसे लोगों के लेख तथा मंचों से सम्मान दिया दिया जाता था जिनके चेहरे दो मुँह वाले होते थे। अब उन व्यक्तियों को किनारे करके वास्तव में आपने एक उचित कार्य किया है। मैं आपके साथ विदेशों में तथा गोधरा काण्ड, टंकारा से अमृतसर भ्रूण हत्या आन्दोलन तथा सती प्रथा काण्ड में शामिल हुआ हूँ। पत्रिका में आमूल–चूल परिवर्तन करने के लिए धन्यवाद।

– मामचन्द्र रिवाड़िया, ए/सी–23, टैगोर गार्डेन, नई दिल्ली–110027, मो.:–9812003162, 9212013226

आदरणीय सम्पादक जी

सादर नमस्ते!

आपके वैदिक सार्वदेशिक का स्वरूप बदला हुआ देखकर तथा सम्पादक के स्थान पर आप जैसे आर्य विद्वान का नाम पढ़कर महान प्रसन्नता हुई। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा 3/5 महर्षि दयानन्द भवन रामलीला मैदान/आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002 के यशस्वी प्रधान, देश–विदेशों में आर्य समाज का नाम रोशन करने वाले प्रकाण्ड विद्वान पूज्य स्वामी अग्निवेश जी ने जो लेख लिखा है "किसी भी हत्या को जायज नहीं ठहराया जा सकता, गोली नहीं बोली से ही बनेगी बात" यह बहुत पसंद आया। यह सारगर्भित और मार्मिक विचारधारा से ओत–प्रोत है।

इस अवसर पर, आपकी पूज्य स्वामी जी की, वैदिक सार्वदेशिक की सेवा में हार्दिक बधाई प्रस्तुत करते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना वेदसूर्य परिवार करता है।

– महावीर सिंह आर्य, सम्पादक, वेदसूर्य साप्ताहिक, मथुरा, मो.:–9675718925

आदरणीय सम्पादक जी

सादर नमस्ते!

वैदिक सार्वदेशिक का रंगीन अंक कई सप्ताह से प्राप्त हो रहा है। जबसे इसमें बदलाव आया है यह पत्रिका आर्य जगत में अपना अलग स्थान बनाने में अग्रसर है। समाज की जड़ता को मिटाने वाले लेख इसमें प्रमुखता से प्रकाशित किये जा रहे हैं। एतदर्थ धन्यवाद।

– धर्मेन्द्र आर्य, पट्टी चौधरान, छपरौली, बागपत, उत्तर प्रदेश

अंधविश्वास, रूढ़िवाद, अवतारवाद एवं पाखण्ड के खिलाफ
महर्षि दयानंद की सिंह गर्जना - सत्यार्थप्रकाश का 11 वां समुल्लास
मंगाइये, पढ़े, पढ़वायें, बाटें, भेंट करें
मात्र 20 रुपये सहयोग राशि
10 या अधिक प्रतियाँ मंगाने पर 50 प्रतिशत छूट
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली - 110002
दूरभाष :- 011-23274771, 23260985

प्रो० विद्वलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विद्वलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : Sarvadeshik@yahoo.co.in वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।